...ताकि विदर्भ के नौजवान बने आत्मनिर्भर, उनके लिए खुले संभावनाओं के नये द्वार

— टेक्सटाइल्स डिजाइन के क्षेत्र में नये कोर्स से कितने किस्म की संभावनाएं बनती हैं , इस पर वक्ताओं ने की विस्तार से बात

—कुलपति ने कहा: देश के नौजवान कौशल और हुनर वाले हों, इस दिशा में विश्वविद्यालय निरंतर प्रयास करेगा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने विदर्भ क्षेत्र में संभावनाओं के नये द्वार खोलने व युवाओं को भविष्य में आत्मनिर्भर बनाने की ओर प्रेरित करने की दिशा में एक अहम पहल की है. इस

नयी पहल की रूपरेखा की एक झलक डिप्लोमा इन टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रम के तहत भारतीय वस्त्र उद्योग में कौशल विकास विषय पर आज दिनांक 13/03/16 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में देखने को मिला. सेमिनार में विषय प्रवेश के दौरान ही कार्यक्रम के संयोजक एवं पाठ्यक्रम के निदेशक डॉ. मनोज राय ने विश्वविद्यालय की इस दूरदर्शिता को स्पष्ट किया. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में कौशल विकास पाठ्यक्रम का प्रारम्भ इसी वर्ष से हुआ है ताकि विदर्भ क्षेत्र में 12वीं पास छात्र भी आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होने बताया कि कैसे आज युवा जनसंख्या पढने के बावजूद, उन्नत व रोजगारपरक प्रशिक्षण

व कौशल के अभाव में भटक रही है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य कौशल, ज्ञान तथा योग्यताओं के माध्यम से युवाओं को सक्षम व सृजनात्मक बनाए रखना है। अंग्रेज़ो के आने से सृजनात्मकता का नाश हुआ और मनरेगा जैसे रोजगार कार्यक्रम भी सृजनात्मकता को खत्म कर रहे हैं। हर कला और कौशल के लोग रोजगार के अभाव में सिर्फ एक ही तरह की मज़दूरी कर रहे हैं। इसलिए लोगों की क्षमता को पहचानना होगा और हमें पुनः उसे विकसित करने की पहल भी करनी होगी। डॉ राय ने विषय को विस्तारित करते हुए कई और अहम बातें कहीं. उन्होंने रोचक जानकारी देते हुए बताया कि गांधी जी ने अपने वक्तव्य में कहा था कि सीता अपने हाथ की बनी साड़ी पहना करती थीं। यह धर्म या आस्था की वजह से नहीं बल्कि इस उद्देश्य से कही गयी थी कि वह शक्ति, शील और श्रम का समन्वय थीं, जिसकी आज कमी महसूस की जा रही है। उन्होने यह भी बताया कि देह व्यापार करनेवाली स्त्रियॉं को भी कैसे अर्थतन्त्र बता कर गांधी जी ने चरखा चलाने और सम्मान की रोटी खाने की सीख दी थी। वे युवा, महिलाओं तथा वंचित वर्ग के लोगों को वस्त्र निर्माण का कौशल प्रदान कर सृजन और रोजगार का अवसर प्रदान करने

की ओर लोगों प्रेरित करते थे और यही मात्र एक तरीका है, जो समाज को समतामूलक भी बनाता है।

डॉ राय द्वारा विषय प्रवेश कराने के पहले कार्यक्रम का उदघाटन पारंपरिक तरीके से हुआ। अतिथियों का स्वागत सूत माला देकर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति गिरीश्वर मिश्र ने प्रोफ़ेसर मनोज राय की सराहना करते हुए कहा कि समर्थ व सशक्त भारत को बनाने के लिए युवाओं का सशक्त और आत्मनिर्भर होना जरूरी है और यह पहल बेहद सराहनीय है। उन्होने कहा कि सामान्य शिक्षा की पद्धति आजीविका के लिए पर्याप्त नहीं है इसलिए कौशल निर्माण के क्षेत्र में टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग का यह कोर्स प्रारम्भ होना एक सार्थक व सराहनीय पहल है। स्किल शब्द सुनने में काफी आकर्षक लगता है और स्किल्ड बन जाये तो और भी बेहतर। उन्होने आश्वस्त किया कि यह पहला आयोजन है और आगे आप ऐसे कई आयोजनों से खुद को निखार पाएंगे। भारत प्राचीन समय में अपने हुनर, कौशल और वस्त्र निर्माण जैसी कलाओं के आधार पर ही सोने की चिड़िया का देश था, जिसे फिर से निखारने की जरूरत है।

पी. बी टेक्सटाइल्स, हिंगनघाट के निर्यात प्रमुख विवेक सक्सेना ने अपने वक्तव्य में कहा कि 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने और अपने जीवन के बहुमूल्य बारह वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में झोंक देने के बावजूद छात्रों को कौशल के अभाव में मजदूरी करनी पड़ती है, उसे कोई बेहतर रोजगार नहीं मिल पाता। इसलिए जरूरी है कि वह किसी भी क्षेत्र में दक्षता हासिल करे। उन्होने यह भी बताया कि यूके, यूएसए, आस्ट्रेलिया जैसे देशों में वस्त्र निर्माण की स्थिति बहुत बुरी है, लेकिन एशियाई देशों की स्थिति काफी

बेहतर है। बांग्लादेश इस क्षेत्र में काफी आगे है। यह हम सभी जानते हैं कि रोटी, कपड़ा और मकान हमारी बुनियादी जरूरत है, इसलिए वस्त्र उद्योग का महत्व हमेशा महत्वपूर्ण बना
रहेगा।

(MGIRI) के निदेशक डॉ. पी. बी काले ने कहा कि उनकी संस्था ने इस क्षेत्र में एक नयी पहल की है और लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान कर रही है। MGIRI में ऐसी मशीने लगाई गयी हैं जो पूरी तरह सौर्य संचालित हैं। इस संयंत्र मेंउसके लूम, चरखे, पंखे सब सौर्य संचालित हैं, जिसके लिए न तो बिजली की जरूरत है और न ही औद्योगिक नीतियों का कुप्रभाव इस पर पड़ सकता है। यह गांधी जी के स्वावलंबन की ओर एक बेहद सार्थक और सफल प्रयोग है। उन्होने यह भी बताया कि कैसे 220 रुपये में बनने वाली खादी की शर्ट बाजार में 700 रुपये में बिकती है। विश्वविद्यालय के छात्रों का उन्होने आह्वान किया कि वे आकार उनके संस्थान का भ्रमण करें और सीखें ताकि भविष्य में वो भी कुछ कर पाएँ। इसके अलावा उन्होने प्री स्पीनिंग, स्पीनिंग, डाइंग, वस्त्र सज्जा, कपास की पहचान और वस्त्र निर्माण से जुड़े कई अन्य पहलुओं को भी बताया।

ग्राम सेवा मण्डल, वर्धा की सुश्री करुणा जी ने बताया कि आज गावों को आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत है। उन्होने यह भी बताया कि प्राचीन समय में वस्त्र निर्माण कार्य महिलाओं के जिम्मे था और कृषि पुरुषों के, जो बाद में पुरुषो के अधीन आ गया। इसका जीवित रूप आज भी पूर्वोत्तर में देखा जा सकता है जहां आज भी महिलाएं रोज सूत कातती हैं और वस्त्र निर्माण करती हैं। उन्होने अंग्रेजों को कोसते हुए

कहा कि पहले भारत 'आजाद गाँव का आजाद देश था' जिसे अंग्रेजों ने 'गुलाम गाँव का गुलाम देश' बना डाला। उन्होने कहा कि आजकल लोगों का रुझान खादी की तरफ बढ़ रहा है और लोगों को समझ आने लगा है कि यह वस्त्र कितना आरामदायक है। विदेशी इसे 'कूल' ड्रेस कहते हैं और हमलोग इसके महत्व को कम आंक लेते हैं। उन्होने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में और बेहतर कार्य कैसे हो इस पर विचार करना होगा। साथ ही उन्होने आश्वस्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के साथ वह हर तरह का सहयोग करने को तैयार हैं।

इंडोवर्थ कम्पनी के मानव संसाधन के अध्यक्ष आर के धीमन ने अपने वक्तव्य में कहा कि 1860 से 1880 में भारत में कई कपड़ा मीलें खुलीं लेकिन आधुनिकीकरण व अपग्रेड न होने के कारण कालांतर में बंद हो गईं। विदेशी मशीनें तकनीकी दृष्टि से काफी बेहतर हैं जो कम कपास में ही ज्यादा कपड़े बनाती हैं। लेकिन विदेशों में मजदूरी काफी महंगी है, वे भारत में मशीनें लगा रहे हैं ताकि सस्ते मजदूर मिल सकें। कच्चा माल यहाँ का, मजदूरी यहाँ की और तैयार माल वहाँ से बन कर आकर हमारी जेब को ही खाली करवा लेता है। इससे बेहतर होगा कि हम खुद सक्षम बनें और इसका लाभ लें। इस पर हमें सोचना-विचार करना होगा। यह बदलाव तब ही संभव है जब विद्यालय स्तर पर ही शिक्षण और प्रशिक्षण दिया जाये। उन्होने यह भी बताया कि कैसे कम जानकार लोगों को मजदूर की नौकरी दी जाती है ताकि वे मेहनत से काम करें और प्रतिरोध न करें।

विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर देवराज ने गावों के स्वावलंबन व स्वरोजगार पर ज़ोर देते हुए विषय के तमाम पहलुओं पर छात्रों का ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि सिर्फ विषय की जानकारी ही नहीं बल्कि

इच्छाशक्ति, उत्साह, उमंग, साहस, संस्कृति और परंपरा के प्रति प्रेम और राज सत्ता और समाज को जानना भी कौशल निर्माण का ही पक्ष है और इसे जानना जरूरी है। उन्होने देश-विदेश के विभिन्न हिस्सों के उदाहरणों के साथ समझाने की चेष्टा की और कहा कि साधक की तरह साधना करें तभी सफलता हासिल हो पाएगी। विपरीत परिस्थितियों में भी खुद को कैसे बेहतर बनाए रखा जा सकता है इस विषय पर भी उन्होने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और कहा कि विदर्भ के किसानो और वंचित समुदाय के लोगों को इस उद्योग में स्थान कैसे मिले इस पर भी पहल करनी होगी।

विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक कौशल किशोर त्रिपाठी ने विशेष तौर पर युवा, महिलाओं और वंचित समुदाय के लोगों को कौशल प्रदान करने के अवसर का सृजन करने पर ज़ोर डाला और स्टेकधारियों से कौशल विकास पहल की वचन बद्धता को बढ़ावा देने और वर्तमान बाजार और रोजगार की आवश्यकताओं से संबद्ध कार्य पर बल देने को कहा। धन्यवाद ज्ञापन प्रशांत राय ने किया। इस अवसर पर भारी संख्या में शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।

द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञों में एमगिरी के वैज्ञानिक श्री महेश कुमार, दर्डा इंजीनियरिंग कॉलेज, वर्धा के प्रोफेसर गणेश कक्कड़, प्रो. संदीप सोनी और डॉ. मनोज एम राय ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों और सहभागियों को प्रमाण पत्र देकर उन्हें इस महती आयोजन में भाग लेने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया.